

# प्रेमचन्द के उपन्यासों में युगीन सामाजिक सच्चाई

शोधार्थी :- शीला छीपा

विभाग और संस्थान का नाम :- कला संकाय, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ -  
उदयपुर

## सारांश

हिन्दी साहित्य में मुंशी प्रेमचन्द का स्थान युगद्रष्टा साहित्यकार के रूप में स्थापित है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से भारतीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों, वर्ग-विभाजन, आर्थिक विषमता, जातिगत शोषण, स्त्री-दशा, किसान जीवन, औपनिवेशिक प्रभाव तथा नैतिक पतन का अत्यंत सच्चा या वास्तविक चित्रण किया। उनके उपन्यास केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि तत्कालीन भारतीय समाज का जीवंत दस्तावेज हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में प्रेमचन्द के प्रमुख उपन्यासों — गोदान, निर्मला, सेवासदन, गबन, रंगभूमि आदि — के आधार पर सामाजिक सच्चाइयों का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि प्रेमचन्द ने साहित्य को समाज सुधार का माध्यम बनाया तथा मानवीय संवेदनाओं को सामाजिक यथार्थ से जोड़ा।

मुख्य शब्द : सामाजिक यथार्थ, किसान जीवन, स्त्री-विमर्श, जाति व्यवस्था, औपनिवेशिक समाज,

प्रेमचन्द।

## 1. प्रस्तावना: साहित्य और समाज का अंतर्संबंध

साहित्य को 'समाज का दर्पण' कहना एक रूढ़ि हो सकती है, या हर साहित्य का विद्यार्थी इस पंक्ति को कई बार पढ़ता और सुनता है। और कई बार अपने मन में प्रश्न भी उठाता है कि वास्तव में साहित्य रूपी दर्पण में समाज वो ही अक्ष कहाँ दिखता जैसा वह है। क्योंकि साहित्य में व्यक्त समाज के चेहरे पर तो कल्पना या अतिरेक की लिपापोति भी तो होती है। किंतु मुंशी प्रेमचन्द के संदर्भ में यह एक जीवंत सत्य है। प्रेमचन्द उस संक्रमण काल के रचनाकार हैं जब भारत एक ओर मध्यकालीन सामंती बेड़ियों को तोड़ने की कोशिश कर रहा था और दूसरी ओर औपनिवेशिक दासता एवं आधुनिक पूँजीवाद के नए चंगुल में फंस रहा था। प्रेमचन्द ने साहित्य के उद्देश्य को परिभाषित करते हुए स्पष्ट कहा था— "साहित्य केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं है, बल्कि वह राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है।" प्रस्तुत आलेख उनके उपन्यासों के माध्यम से उस 'मशाल' की रोशनी में तत्कालीन समाज के अंधेरे कोनों की पड़ताल करता है।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक समय में भारतीय समाज अनेक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं से जूझ रहा था। अंग्रेजी शासन के कारण आर्थिक शोषण बढ़ रहा था, ग्रामीण जीवन निर्धनता से ग्रस्त था तथा समाज में रूढ़ियाँ और कुरीतियाँ गहराई से विद्यमान थीं। ऐसे संक्रमणकाल में मुंशी प्रेमचन्द ने साहित्य को समाज का दर्पण बनाते हुए जनजीवन की वास्तविकताओं को अभिव्यक्ति दी।

प्रेमचन्द के उपन्यासों में आदर्शवाद और यथार्थवाद का संतुलित समन्वय मिलता है। इसीलिए उन्हें केवल यथार्थवादी उपन्यासकार कहना अधूरी बात होगी।

वास्तव में वे आदर्शोन्मुख यथार्थवादी साहित्यकार हैं।

उन्होंने समाज के उपेक्षित वर्गों — किसान, मजदूर, स्त्री, दलित तथा निम्न मध्यवर्ग — की पीड़ा को केंद्र में रखा। उनके साहित्य में तत्कालीन भारतीय समाज की आर्थिक, धार्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक समस्याएँ अत्यंत प्रभावशाली रूप में चित्रित हुई हैं।

## 2. प्रेमचन्द : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मुंशी प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ। उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने प्रारम्भ में उर्दू में लेखन किया तथा बाद में हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। प्रेमचन्द ने कथा साहित्य को सामाजिक यथार्थ से जोड़कर नई दिशा प्रदान की।

उनके प्रमुख उपन्यास हैं —

गोदान

निर्मला

सेवासदन

गबन

रंगभूमि

कर्मभूमि

प्रेमाश्रम

इन रचनाओं में तत्कालीन भारतीय समाज का बहुआयामी चित्र उपस्थित है।

### 3. शोध के उद्देश्य (Objectives of Research)

इस शोध आलेख में मुख्यतः निम्नलिखित बिन्दुओं की समीक्षा की गयी या प्रेमचन्द के उपन्यासों के विश्लेषण से उभरे निम्नलिखित बिन्दुओं का अध्ययन करने का कार्य किया गया है-

प्रेमचन्द के उपन्यासों में चित्रित कृषक समाज की आर्थिक जड़ताओं का विश्लेषण करना , नारी पराधीनता और मध्यम वर्गीय कुंठाओं के अंतर्संबंधों को समझना , पूँजीवाद और औद्योगिकीकरण के ग्रामीण समाज पर प्रभावों का मूल्यांकन करना , तत्कालीन सामाजिक सच्चाई का स्वरूप , किसान जीवन का यथार्थ चित्रण , स्त्री जीवन की त्रासदी , दहेज प्रथा और अनमेल विवाह

जातिगत भेदभाव और सामाजिक विषमता, मध्यवर्गीय जीवन और नैतिक संकट , औपनिवेशिक शासन और सामाजिक परिवर्तन , धार्मिक पाखंड और सामाजिक रूढ़ियाँ, प्रेमचन्द का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद आदि ।

### 4. कृषक जीवन का महाकाव्यात्मक त्रासद: 'गोदान' और 'प्रेमाश्रम'

प्रेमचन्द का किसान केवल खेत जोतने वाला मजदूर नहीं है, वह भारतीय संस्कृति का वाहक है जो ऋण के बोझ तले दबकर अपनी अस्मिता खो रहा है।

ऋण का दुष्चक्र: 'गोदान' के होरी का संघर्ष यह सिद्ध करता है कि किसान के लिए कर्ज केवल आर्थिक बोझ नहीं, बल्कि एक जन्मजात अभिशाप है। वह 500 के ऋण को चुकाने के लिए अपना पूरा जीवन होम कर देता है। यहाँ प्रेमचन्द दिखाते हैं कि कैसे महाजन, पटवारी और ज़मींदार मिलकर एक 'नेक्सस' (Nexus) बनाते हैं।

सामंती क्रूरता: 'प्रेमाश्रम' में प्रेमचन्द ने ज़मींदारी प्रथा के उस नग्न रूप को दिखाया है जहाँ लगान की वसूली के लिए मानवीय संवेदनाओं की बलि चढ़ा दी जाती है।

### 5. जातिवाद और दलित चेतना: 'रंगभूमि' एवं 'कर्मभूमि'

प्रेमचन्द ने दलित समस्या को केवल सहानुभूति के स्तर पर नहीं, बल्कि अधिकार के स्तर पर उठाया।

सूरदास का प्रतिरोध: 'रंगभूमि' का पात्र सूरदास अंध होने के बावजूद नैतिक रूप से इतना सबल है कि वह जॉन सेवक जैसे पूँजीपति और सरकारी मशीनरी के सामने झुकता नहीं है। वह गांधीवादी अहिंसा और सत्याग्रह का ऐसा प्रतीक है जो अपनी ज़मीन (आजीविका) को कारखाने की भेंट नहीं चढ़ने देना चाहता।

सामाजिक बहिष्कार: उन्होंने दिखाया कि कैसे छुआछूत केवल व्यक्तिगत द्वेष नहीं, बल्कि एक संगठित सामाजिक संरचना है जो दलितों को शिक्षा और गरिमा से वंचित रखती है।

## 6. स्त्री विमर्श: देह, दहेज और सामाजिक दंड

प्रेमचन्द के नारी पात्र (सुमन, निर्मला, धनिया, जालपा) पितृसत्तात्मक समाज की कठोरता और स्त्री की अदम्य जिजीविषा को दर्शाते हैं।

पितृसत्ता का प्रहार: 'निर्मला' उपन्यास में अनमेल विवाह के माध्यम से यह दिखाया गया है कि कैसे एक युवा स्त्री का जीवन 'सामाजिक लोकलाज' की वेदी पर चढ़ा दिया जाता है। यहाँ समाज की संवेदनहीनता चरम पर है।

वेश्यावृत्ति और मध्यवर्ग: 'सेवासदन' (बाज़ार-ए-हुस्न) में सुमन का वेश्या बनना उसकी नियति नहीं, बल्कि समाज की उस विकृति का परिणाम है जहाँ दहेज के अभाव में एक स्त्री को घर से निकाल दिया जाता है। प्रेमचन्द प्रश्न उठाते हैं कि वेश्याओं को तिरस्कृत करने वाला समाज उन पुरुषों को क्यों नहीं दंडित करता जो वहाँ ग्राहक बनकर जाते हैं?

## 7. मध्यम वर्गीय पाखंड और मनोवैज्ञानिक यथार्थ

'गबन' उपन्यास मध्यम वर्ग की दिखावे की प्रवृत्ति पर एक गहरा प्रहार है।

जालपा और रमानाथ: प्रेमचन्द ने यहाँ आर्थिक यथार्थ को मनोविज्ञान से जोड़ा है। आभूषणों की चाहत केवल एक स्त्री की इच्छा नहीं, बल्कि समाज में अपनी 'क्लास' (Class) दिखाने की मजबूरी है। रमानाथ द्वारा सरकारी धन का गबन करना उस नैतिक पतन का संकेत है जो आज के भ्रष्टाचार की जड़ है।

## 8. औद्योगिकीकरण बनाम ग्रामीण कुटीर उद्योग

प्रेमचन्द दूरदर्शी थे। उन्होंने 'रंगभूमि' में ही भांप लिया था कि मशीनीकरण भारत के ग्रामीण ढाँचे को छिन्न-भिन्न कर देगा। पाश्चात्य सभ्यता और भारतीय मूल्यों के टकराव को उन्होंने आर्थिक चश्मे से देखा। वे विकास के विरोधी नहीं थे, लेकिन उस विकास के विरोधी थे जो मनुष्य को मशीन बना दे और गरीब को विस्थापित कर दे।

## 9. तत्कालीन सामाजिक सच्चाई का स्वरूप

प्रेमचन्द के समय का भारतीय समाज अनेक विसंगतियों से भरा हुआ था। सामाजिक सच्चाई का आशय उन वास्तविक परिस्थितियों से है जो समाज में व्याप्त थीं और जिन्हें साहित्यकार ने यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया। प्रेमचन्द ने निम्न सामाजिक सच्चाइयों को अपने उपन्यासों में प्रमुखता दी —

किसान जीवन और आर्थिक शोषण

स्त्री की स्थिति

दहेज प्रथा और अनमेल विवाह

जातिगत भेदभाव

नैतिक पतन और भ्रष्टाचार

औपनिवेशिक शासन का प्रभाव

मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाएँ

धार्मिक पाखंड और सामाजिक रूढ़ियाँ

## 10. किसान जीवन का यथार्थ चित्रण

प्रेमचन्द को "किसान जीवन का महाकवि" कहा जाता है। उनके उपन्यास गोदान में भारतीय किसान की करुण गाथा चित्रित हुई है। उपन्यास का नायक होरी भारतीय किसान वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है, जो जीवन भर संघर्ष करता है लेकिन शोषण से मुक्त नहीं हो पाता।

होरी का जीवन जमींदारों, साहूकारों और सामाजिक परंपराओं के बीच पिसते हुए किसान की वास्तविक स्थिति को व्यक्त करता है। किसान की गरीबी, ऋणग्रस्तता, श्रम और असहायता का इतना मार्मिक चित्रण हिन्दी साहित्य में दुर्लभ है।

प्रेमचन्द ने यह स्पष्ट किया कि किसान केवल आर्थिक ही नहीं, सामाजिक और मानसिक रूप से भी शोषित था। समाज की समस्त व्यवस्था उसके विरुद्ध कार्य कर रही थी।

## 11. स्त्री जीवन की त्रासदी

प्रेमचन्द ने भारतीय नारी की पीड़ा, त्याग और संघर्ष को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया। निर्मला दहेज प्रथा और अनमेल विवाह की समस्या पर आधारित उपन्यास है।

निर्मला का विवाह अधिक आयु वाले पुरुष से कर दिया जाता है क्योंकि उसके पिता पर्याप्त दहेज देने में असमर्थ होते हैं। परिणामस्वरूप उसका जीवन दुःख, संदेह और मानसिक यातना का प्रतीक बन जाता है।

इसी प्रकार सेवासदन में स्त्री की सामाजिक स्थिति और वेश्यावृत्ति की समस्या को चित्रित किया गया है। प्रेमचन्द ने यह दर्शाया कि सामाजिक परिस्थितियाँ किस प्रकार स्त्री को विवश कर देती हैं।

उनके उपन्यासों में स्त्री केवल करुणा की पात्र नहीं है, बल्कि आत्मसम्मान और चेतना की प्रतीक भी है।

## 12. दहेज प्रथा और अनमेल विवाह

प्रेमचन्द ने भारतीय समाज की इस गंभीर समस्या को गहराई से समझा। दहेज प्रथा ने मध्यवर्गीय परिवारों को आर्थिक और मानसिक संकट में डाल दिया था।

निर्मला में दहेज के कारण उत्पन्न पारिवारिक विघटन को अत्यंत मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह उपन्यास स्पष्ट करता है कि सामाजिक प्रतिष्ठा की झूठी भावना ने स्त्री जीवन को असुरक्षित बना दिया था।

अनमेल विवाह के कारण उत्पन्न अविश्वास और मानसिक दूरी परिवार को नष्ट कर देती है। प्रेमचन्द ने इस समस्या के माध्यम से समाज सुधार का संदेश दिया।

### 13. जातिगत भेदभाव और सामाजिक विषमता

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था एक गंभीर समस्या थी। प्रेमचन्द ने दलितों और निम्न वर्गों की पीड़ा को भी स्वर दिया।

रंगभूमि में सूरदास का चरित्र शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। वह अंधा होने के बावजूद नैतिक दृष्टि से समाज के तथाकथित उच्च वर्ग से अधिक जागरूक दिखाई देता है।

प्रेमचन्द ने जाति-आधारित भेदभाव और सामाजिक अन्याय का विरोध किया। उनके साहित्य में मानवीय समानता और सामाजिक न्याय की भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है।

### 14. मध्यवर्गीय जीवन और नैतिक संकट

गबन मध्यवर्गीय जीवन की कृत्रिमता और दिखावे का उत्कृष्ट चित्रण है। उपन्यास का नायक रमानाथ सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए भ्रष्टाचार और छल का मार्ग अपनाता है।

यह उपन्यास बताता है कि तत्कालीन मध्यवर्ग आर्थिक दबाव और सामाजिक प्रदर्शन के कारण नैतिक पतन की ओर बढ़ रहा था। प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग की कमजोरियों और सामाजिक दबावों को यथार्थ रूप में चित्रित किया।

### 15. औपनिवेशिक शासन और सामाजिक परिवर्तन

प्रेमचन्द के उपन्यासों में अंग्रेजी शासन का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है। अंग्रेजी प्रशासन, पूँजीवादी व्यवस्था तथा औद्योगीकरण ने भारतीय समाज को प्रभावित किया।

रंगभूमि में औद्योगिक पूँजीवाद और ग्रामीण जीवन के संघर्ष को चित्रित किया गया है। भारतीय समाज पर पश्चिमी प्रभाव बढ़ रहा था, जिससे पारंपरिक मूल्यों में परिवर्तन आने लगा था।

प्रेमचन्द ने राष्ट्रीय चेतना और स्वदेशी भावना को भी अपने साहित्य में स्थान दिया।

### 16. धार्मिक पाखंड और सामाजिक रूढ़ियाँ

प्रेमचन्द ने धर्म के नाम पर होने वाले शोषण और पाखंड का विरोध किया। उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और कर्मकाण्ड की आलोचना की।

उनके पात्र धार्मिक आडंबर से अधिक नैतिकता और मानवीयता को महत्व देते हैं। प्रेमचन्द का दृष्टिकोण मानवतावादी था। वे धर्म को सामाजिक सद्भाव और नैतिकता से जोड़कर देखते थे।

## 17. प्रेमचन्द का यथार्थवाद

प्रेमचन्द के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उनका यथार्थवाद है। उन्होंने जीवन को उसी रूप में प्रस्तुत किया जैसा वह वास्तव में था। उनके उपन्यासों में कल्पना की अपेक्षा वास्तविकता अधिक है।

उनका यथार्थवाद केवल समस्याओं का चित्रण नहीं करता, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा भी देता है। वे साहित्य को समाज सुधार का साधन मानते थे।

## 18. विश्लेषणात्मक निष्कर्ष (Analytical Synthesis)

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यास तत्कालीन भारतीय समाज की जीवंत सामाजिक दस्तावेज हैं। उन्होंने किसान, स्त्री, दलित, मध्यवर्ग और शोषित वर्ग की समस्याओं को गहन संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया।

उनके साहित्य में सामाजिक सच्चाई केवल वर्णन मात्र नहीं है, बल्कि परिवर्तन की चेतना भी है। प्रेमचन्द ने साहित्य को जनजीवन से जोड़कर उसे सामाजिक उत्तरदायित्व प्रदान किया। आज भी उनके उपन्यास भारतीय समाज की अनेक समस्याओं को समझने में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

प्रेमचन्द का यथार्थवाद 'नग्न यथार्थवाद' (Naturalism) नहीं है, बल्कि 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' है। वे समाज की सड़न को दिखाते हैं, लेकिन अंत में एक नैतिक समाधान की तलाश भी करते हैं। उनके उपन्यासों की भाषा केवल संवाद नहीं है, वह तत्कालीन भारत की 'बोलती तस्वीर' है।

यूजीसी मानकों के अनुरूप यदि हम उनके साहित्य का पुनर्मूल्यांकन करें, तो हम पाते हैं कि प्रेमचन्द ने जिन समस्याओं (जैसे किसानों की आत्महत्या, दहेज हत्या, दलित उत्पीड़न) की जड़ें 100 साल पहले खोदी थीं, वे आज भी किसी न किसी रूप में मौजूद हैं। अतः उनका साहित्य केवल 'ऐतिहासिक दस्तावेज' नहीं, बल्कि 'वर्तमान की मार्गदर्शिका' भी है।

## 19. सन्दर्भ सूची ( Bibliography)

शुक्ल, रामचन्द्र (1930): हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

शर्मा, रामविलास (1968): प्रेमचन्द और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली। (पृष्ठ संख्या 112-145)।

राय, अमृत: प्रेमचन्द: कलम का सिपाही, हंस प्रकाशन।

मदान, इंद्रनाथ: प्रेमचन्द: एक विवेचन, राधाकृष्ण प्रकाशन।

सिंह, नामवर (2000): कहानी: नयी कहानी, राजकमल प्रकाशन।

मुंशी प्रेमचन्द — गोदान, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद।

मुंशी प्रेमचन्द — निर्मला, हंस प्रकाशन।

मुंशी प्रेमचन्द — गबन, लोकभारती प्रकाशन।

मुंशी प्रेमचन्द — सेवासदन, राजकमल प्रकाशन।

नन्ददुलारे वाजपेयी — हिन्दी साहित्य और संवेदना।

हजारीप्रसाद द्विवेदी — हिन्दी साहित्य की भूमिका

UGC CARE Listed Journals , साहित्य भारती, तद्भव, और हंस के विशेष अंकों का संदर्भ।

### Copyright & License:



© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.